रयत शिक्षा संस्था द्वारा संचलित,

डी.पी.भोसले कॉलेज कोरेगांव

हिंदी विभाग

काव्य पठन प्रतियोगिता

(18 सितंबर, 2017)

इतिवृत्त

दि. 14 सितंबर,2017 हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हमारे महाविद्यालय में हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस अवसर पर हिंदी विभाग की ओर से दि. 18 सितंबर, 2017 को काव्य पठन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इस समय 24 छात्रों ने इसमें अपनी सहभागिता दर्शाई थी। इस प्रतियोगिता में क्रमांक प्राप्त छात्रों को प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। अत: इसतरह यह प्रतियोगिता संपन्न हुई।

विभाग प्रमुख,
हिंदी विभाग
डी. पी. भोसले कॉलेज, कोरेगांव

D.P.BHOSALE COLLEGE KOREGAON

प्राचार्य,
डी. पी. भोसले कॉलेज, कोरेगांव
जि. सातारा

रयत शिक्षण संस्था का

जी पी भोसले कॉलेज

कोरेगाव

हिंदी पखवाड़ा

काव्य पठन प्रतियोगिता

14 सितम्बर 2017

"रयत शिक्षण संस्था
कोल्हापूर"

ठि. पी भोसले कॉलेज
कोरेगांव

काव्यसंग्रह

हिंदी विभाग

कवियत्री :- करिश्मा महमंदरफिक
मोमीन

कक्षा :- तृतीय वर्ष
कला

आखरी सफर

या मैं नींद मे और
मुझे बतना सजाया जा रहा था...
बड़े प्यार से....
मुझे नहलाया जा रहा था
ना जाने,
था वो कौन सा अजब खेल
मेरे घर में...
वस्त्रों की तरह मुझे
कंधे पर उठाया जा रहा था...
था पास मेरा हर अपना,
उस वक्त...
फिर भी मैं,
हर किसी के मन से,
भुलाया जा रहा था...
जो कभी देखते भी न थे,
मोहब्बती निगाहों से
उनके दिल से भी प्यार मुझ पर,
लुटाया जारहा था...
मालूम नहीं क्यों,
हैरान था हर कोई,
मुझे सोते हुए देख कर
जोर-जोर से रोकर मुझे,
जगाया जा रहा था...
काँप उठी मेरी रूह वो मंजर देखकर
जहाँ मुझे हमेशा के लिए सुलाया जा रहा था...
मोहब्बत की इन्तहा थी जिन दिलों मे मेरे लिए,
उन्हीं दिलों के हाथों,
आज मैं दफनाया जा रहा था...

माँ

माँ साल है तो साया-ए कुदरत भी साथ है।
माँ के बिना दिन भी रात है,
मैं दूर जाऊँ तो उसका मेरे सरपर हाथ है।
मेरे लिए तो मेरी मां ही कायनात है।
दामन में मां के सिर्फ वफाओं के फूल हैं,
हम सारे अपनी मां के कदमों के धूल हैं।
औलाद के सितम उसे हँस कर कबूल हैं,
बच्चों को बख्श देना ही मां का उसूल है।
दिन रात उस ने पाल-पोस कर बड़ा किया,
गिरने लगा तो माँ ने मुझे फिर खड़ा किया।
या रब मेरी माँ की सेहत आम रखना,
मैं रहूँ ना रहूँ मेरी माँ का खयाल रखना।
मेरी खुशियां भी ले ले मेरी सांसे भी ले ले,
मगर मेरी मां के गिर्द सदा,
खुशियों का जाल रखना।
पूछता है जब कोई दुनिया में,
मोहब्बत है कहा,
मुस्कुरा देती हूं मैं,
और याद आजाती है माँ।

इनसान भी क्या चीज है!

दौलत कमाने के लिए,
अपनी सेहत खोता है।
फिर सेहत वापस पाने,
अपनी दौलत खोता है।
मुस्तकबील का सोच कर,
अपना हाल जाया करता है।
फिर मुस्तकबील में अपनी,
माजी याद कर के रोता है।
जिता ऐसे है जैसे कभी,
मरेगा ही नहीं।
और मर ऐसे जाता है।
जैसे कभी जिया ही नहीं।

ये वक्त भी क्या चीज है,
लोग वक्त के गुलाम हो गए।
इन्सान पैसों से सब कुछ खरिद सकता है पर,
वक्त को कभी नहीं खरिद सकता,
वक्त के आगे सभी बेबस है,
वक्त के आगे सभी गुलाम है।
जो वक्त की कद्र करता है,
वक्त भी उसकी कदर करता है।
वक्त बदलता रहता है,
वक्त बहता रहता है।
वक्त को रोकने की किसी की जुरुरत नहीं,
कोई बहते पानी को रोक नहीं सकता,
वैसे ही वक्त को कोई रोक नहीं सकता,
नदी के बहाव में आने वाली हर चट्टान को,
जिस तरह टूटना पडता है।
उसी तरह वक्त की कदर न करने वाले को,
हमेशा झुकना ही पडता है।
और जिंदगी में पीछे ही रहना पडता है।
वक्त वक्त की बात है,
कोई कहा तो कोई कहा पहुँच जाता है।

अब्बुजान

माँ जन्नत है तो,
अब्बु जन्नत का दरवाजा।
माँ फूल है तो,
अब्बु उस का रखवाला।
माँ अपना दर्द बया करे,
पर अब्बु उसे सब्र करें।
बेटी के विदाई पर,
माँ रो-रो के बताएँ,
अब्बु घर के किसी कोंने मे,
मुँह छुपाये आसुँ बहाए।
अपने बच्चो के लिए,
दिन रात एक कर मेहनत,
खुन पसीना बहाएँ।
घर की जिम्मेदारी अपनी,
पुरे दिल से निभाए।
अब्बु का प्यार दिखाई नहीं देता,
अब्बु का गुस्सा दिखाई देता है।
हम बारिश है तो,
अब्बु हमारे समंदर है।
जो अपनो को अपने अंदर संभाले;
अब्बु को अपने दिल से उतरने न देना,
अब्बु खुशबु है उसको बिखरने न देना।

बारिश

मैस-में गरमा की पेहली,
रीम-झिम, रीम-झिम
सिम-सिम, सिम-सिम,
थंडी-थंडी, भिनी-भिनी,
ये सुबह आपको मुबारक हो।
यु तो भिगाया सावन ने मगर,
खयालो का आँगन सुखा ही रहा।
जब मह्न की दिवारे गिली हुई,
उस के तस्सवुर से,
तब ही जाना हमने,
बारीश बहुत खुबसुरत होती है।
आज हलकी हलकी बारिश है,
आज सर्द हवा का रकस भी है,
आज फुल भी निखरे निखरे है।
आज उन में तुम्हारा अकस भी है।
बुंदे बारीश की यु जमीं पे आने लगी,
सौंधी सी मेहक मिट्टी की जगाने लगी।
हवाओं मे भी जैसे मस्ती छाने लगी,
वैसे ही हमें भी आपकी याद आने लगी

पैसा

मिली थी जिन्दगी
किसी के काम आने के लिए...
पर वक्त बीत रहा है,
कागज के टुकड़े कमाने के लिए...
क्या करोगे इतना पैसा कमा कर...?
इस पैसे से प्यार नहीं मिलता
और नहीं अपने लोगो का साथ,
पैसा कमाने के लिए रात दिन मरना,
अपने घर वालो को वक्त न देना।
क्या करोंगे इतना पैसा कमा कर,
और ना कफन में जेब है,
ना कब्र में अलमारी।
और ये मौत के फरिश्तें तो,
रिश्वत भी नही लेते।
क्या करोगे इतना पैसा कमा कर?

औरत

इबादतो की तरह मैं काम करती हूँ,
मेरा उसूल है मैं पहले सलाम करती हूँ,
मुखालिफत से मेरी शख्सीयत सँवरती है,
मैं औरतो का बड़ा अहतराम करती हूँ।
शमा बुझ कर भी जल सकती है,
कश्ती किसी भी तूफान से निकल सकती है,
घबराकर ए औरतो अपने इरादे मत बदलो,
तकदीर किसीभी वक्त बदल सकती है।
लोगो ने दिए है हमें इतने गम,
जिसे हम छुपाते कबतक,
अपनी जान मुश्किल मे डालते कबतक,
हँसते - हँसते निकल गये आँसू।
अपनी हालत संभालते कब तक,
मुफ्त में अपनी किस्मत को यु गाफिल न बदनामकर
चाहती हो जिंदगी में नाम मर्तबा तो,
खुद को उस के काबिल करा
कर हिम्मत और जज्बे से खिलाफत,
अपने हक्क के लिए लड़ना सीखा।
अपनी कमी को कमजोरी मत बना।
उसे अपनी ताकत बना कर आगे जा।
और हर मर्द को अहसास दिला की,
मैं खुद जमीन मगर जर्फ आसमान का है,
के टूट कर भी मेरा हौसला चट्टान का है।
ये मुफलिसाना मशवरा है मेरा,
तुम इसे जानलोतो बेहतर है।
सब को पहचानना जरूरी नहीं,
खुद को पहचानलोतो बेहतर है।

एकता

हम आज एकता की मशाअल नई जलाए
हम आज एकता की मशाअल नई जलाए
गंगा के बहते धारे करते है क्या इशारे
आवाज दे रही है, ये ताज के मिनारे
पैगाम दे रही है, येलोरा की ये गुफाएँ
तामिल हो या उर्दू, पंजाब या इसाई
उडिया हो या उर्दु, गुजरात हो या हिंदी
हर एक जबा है अपनी हर एक जबा है प्यारी
सब भली है बोली सबकी भली सदायें
इंसा सब बराबर कुरआन मे बताया
मिल-जूल के सब ने रहना गीताने भी सिखाया
अमन का रस्ता नारद ने भी दिखाया
तेहवार हो किसी का मिलजुल के सब मनाए
दुनिया मे हमको प्यारा भारत वतन हमारा
हम इस गुल के भुटे थे है चमन हमारा
हम है जो नन्हे तारे थे है गगन हमारा
मन काढ़ दे अंधेरा वो रोशनी लुटाएँ।

दोस्ती

दर्द काफी है बेखुदी के लिए,
मौत जरूरी है जिंदगी के लिए।
कौन मरता है किसके लिए,
हम तो जिंदा है आपकी दोस्ती के लिए।
दोस्ती की महक इश्क से कम नहीं होती,
इश्क पे जिंदगी खतम नहीं होती।
आप जैसा दोस्त होतो,
जिंदगी जन्नत से कम नहीं होती।
रोशनी न होतो दिया जलता है,
शमा न होतो परवाना जलता है।
रिश्ता न होतो दिल जलता है,
आप जैसा दोस्त होतो जमाना जलता है।
तेरे साथ गुजारा हर लमहा,
जब भी याद आएगा।
इस जनम के बाद भी,
तेरा खयाल आएगा।
अगर बख्शी खुदाने बार-बार जिंदगी
तुझ से दोस्ती करना, दिल,
बार-बार चाहेंगा।

Sr No	Name of the student	class	Remarks
1	Birje Pooja Maruti	S.Y BA	II
2	Mandhare sharda	B.A.I	
3	kandait Sonali	B.A III	
4	Bhosale Ashwini	B.A.I	
5	Namdas Swati	B.A III	
6.	wagh Punam	B.A.III	
7	kadam Pooja	B.A.I	
8	Mane varsharani	B.A.III	
9	Momin barishma	B.A.III	I
10	Botalji chitra	B.A.I	
11	Barge Ritu	B.A I	
12	Preshita Makar	B.A I	
13	Jadhav Pooja	B.A I	III
14	Barge Megha	B.A.I	
17	Bobate Gouri	B.A.I	
18	Madne Nisha	B.A.I	
19	vairat Prajakta	B.A.I	
20	Sonam Bobade	B.A II	
21	Komal Mane	B.A II	
22	Gouri Bhandalkar	B.A II	
23	Sankapal Amruta	B.A II	
24	Pawar Trupti	B.A II	
25	Sutar Nikita	B.A II	
26	Ghorpade Pooja	B.A II	
27	chavan Aarti	B.A II	
28	Ambawale Poonam	B.A II	

स्वत शिक्षा संस्था द्वारा संचलित,

डी.पी.भोसले कॉलेज कोरेगांव

हिंदी विभाग

काव्य पठन प्रतियोगिता

(18 सितंबर, 2017)

Student's attendance

Sr. No.	Roll.No.	Name of the students	Class	Sign
1	2305	Bhosale Sushma Arvind	B.A. II	
2	2306	Birje Pooja Maruti	B.A. II	
3	2332	Sankpal Amruta Sambhaji	B.A. II	
4	2335	Shaikh Simran Latif	B.A. II	
5	2338	Ambawale Poonam Vishnu	B.A. II	
6	2350	Bhosale Trupti Ankush	B.A. II	
7	2351	Bobade Sonam Shankar	B.A. II	
8.	3053	Chavan Indrajeet Shivaji	B A III	
9	3054	Ghadage Ganesh Vilas	B.A. III	
10.	3055	Inamdar Reshma Daud	B.A. III	
11	3056	Khandit Sonali Rajendra	B.A. III	
12	3057	Mane Varsharani Tanaji	B A III	
13	3058	Momin Karishma Mahammadrafik	B.A. III	
14	3059	Namdas Swati Vasant	B.A. III	
15	3064	Wagh Poonam Govind	B.A. III	
16	1688	Jadhav Gitanjali Jaywant	B.A. I	
17.	1691	Jadhav Rajani Vikas	B.A. I	
18	1698	Maner Salima Sardar	B.A. I	
19	1699	Mulani Sameena Najeer	B.A. I	
20	1706	Shinde Kedar Audumbar	B.A. I	
21	1711	Yewale Pooja Dayanand	B.A. I	
22	1935	Pathan Aman Naushad M	B.A. I	
23	1916	Chavan Nilesh Shivaji	B.A. I	
24	1935	Pathan Aman Naushad M	B A I	-